ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित स्त्री की धार्मिक स्थिति

KEY WORDS: धार्मिक व्यवस्था, परंपरा, स्त्री शोषण, विद्रोह, ।

डॉ॰ धीरेन्द्र सिंह थापा Ph.D.Hindi, M.A., MBA, B.ed., बिलासपुर, जिला-रामपुर (उत्तर प्रदेश),पिन -244921

ABSTRACT

विश्व का प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी धर्म से जुड़ा हुआ है अपने धर्म और संस्कृति का मानव आचरण करता है धर्म और स्त्री का परस्पर संबंध है इसके कई कारण है, हर मनुष्य की जिन्दगी में कोई न कोई पारिवारिक समस्याएँ होती है कुछ समस्याएँ मनुष्य द्वारा तो कुछ समस्याएँ भगवान द्वारा मनुष्य को देखना पड़ता है। इन समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए मनुष्य पूजा-अर्चना करता है ताकि उसकी हर समस्याएँ दूर हो सके। पुरुषों से ज्यादा स्त्रीयों में धार्मिक स्थितियाँ देखने को मिलता है। इदन्नमम उपन्यास में मंदाकिनी और बऊ रामायण का पाठ करती हुई दिखती है। बऊ रामायण का पाठ बार-बार सुनती है तब मंदा बऊ से कहती है ''कितनी बार सुनोगी बऊ? तुम तो हमें वन-गमन से आगे ही नहीं बढ़ने देती। यह भी तो सुनो कि सुर्गीव की सेना ने राम के साथ मिलकर सागर कैसे पाटा था। कोई पाट सकता है बऊ? नदी तक पुल बनाना तो कठिन लगता है।

प्रस्तावना

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास भारतीय समाज की स्त्री-जीवन की जटिलताओं, द्वंद्वों और संघर्षो के अनूठे दस्तावेज हैं। उनके साहित्य में स्त्री न केवल सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक असमानताओं से जूझती है, बल्कि धार्मिक रुढ़ियों और पितृसत्तात्मक आस्था-व्यवस्था का भी गहरा शिकार बनती है। उनके उपन्यासों में चित्रित स्त्रियाँ धार्मिक व्यवस्था की उस भूमिका को उजागर करती हैं जो स्त्री को सीमित, नियंत्रित और अधीनस्थ बनाए रखने में सहायक रही है।

'अगनपाखी उपन्यास में भुवन का विवाह एक पागल व्यक्ति के साथ होता है पागल पति की मृत्यु के बाद उसे सती करवाना चाहता है ताकि उसकी जायदाद हड़प सके। जेठ भुवन को घर में कैद कर देता है। भुवन धर्म का रास्ता अपनाती है। भुवन के चंदर को खबर लगती है कि भुवन जोगिन हो गई है। भुवन औरत से सन्यासिन हो गई है। चंदर को इस बात पर विश्वास नहीं होता है। भुवन के मैके का मंगल माली भुवन को देखकर आता है। चंदर को बताने लगता है। तांत्रिक उसके बीमार पति को ठीक करने के लिए उसे व्रत रखने को कहता है। 'जोगीया धोती पहने भुवन बडे-बडे मनकों की कंठी दिखाने लगी देखा, नीम का तेल, कपूर का धुआँ और कबूतर की देह जलाकर जोत जगाई थी। भभूत बनाकर तैयार की और बताया कि रोगी के माथे, कान और भुजाओं पर भभूत लगाओ। मंत्र पढ़ो और माला फेरो। दिन भर उपासे रहो। रात को दो केलों से व्रत तोड़ो. चटपटा, चिकनाई और खट्टा मत खाओ'[1] धार्मिक कार्य में स्त्री का स्थान परंपरा ने कायम किया है।

आधुनिक काल से ही इसका प्रभाव कम होने के बजाय बढ़ गया है। प्रचार प्रसार के माध्यमों द्वारा रुढ़िवादी परंपराओं को बहुत प्रोत्साहन मिल रहा है। यह समाज इसे प्रचारित होने भी दे रहा है। मैत्रेयी जी के चाक उपन्यास में ऐसे कई सारे प्रसंगों का चित्रण किया गया है। एक जमाना था. जब जाटों में करवाचौथ नहीं मनाई जाती थी, लेकिन जब से लड़कियाँ बहुएँ अलीगढ़-हथरस में जाकर सिनेमा-ठेठर देखने लगी है तब से मैं तो छोड़ चली बाबुल का देस, पिया का घर प्यारा लगे के अंदाज में सजकर नाचती गाती है सातों कौम की स्त्रियाँ।[2]

रुढ़ि-परंपरा कम होने के बजाय बढ़ती हुई दिखाई दे रही है अंधविश्वास के बढ़ने के कारण रुढ़ि-परंपरा का पालन भी बढ़ गया है और यही अंधविश्वास आगे जाकर अंधश्रद्धा के रूप में रिवाज का रूप ले लेती है और इसे बढ़ावा देने का कार्य प्रचार-प्रसार के माध्यम से ज्यादा दिखाई दे रहा है वही समाज में व्रत-वैकल्य आदि बढ़ जाये तो वह रुढ़ हो जाती है जो कि आगे चलकर परंपरा के रूप में निभाई जाती है इस रुढ़ि-परंपरा को कम होने के बजाय अधिक महत्व दिया जाता है। 'अल्मा कबूतरी' में इसका पालन दिखाई देता है। जिसमें कबूतरा के लोग वीर देव की पूजा करते है। वहीं 'चाक' उपन्यास में भी शितला देवी की पूजा करना और कुँवारी लडकियों का कार्तिम मास में नहाने के लिए जाना दिखाया गया है। जो कि पालन के रूप में परंपरा को निभाये जाते है। झूलानट में शीलों अपने पति को वापस पाने के लिए व्रत रखती है। मैत्रेयी जी के उपन्यासों में इस तरह के कई प्रसंगो का वर्णन किया गया है।

विवाह मे कुछ कुप्रथाओं का चित्रण शुरु से ही होता आ रहा है जैसे कि दहेज प्रथा। सरकार ने दहेज प्रथा को रोकने के लिए कई सारे नियम कानून बनाए है लेकिन उसका अभी तक कोई सकारात्मक परिणाम देखने को नहीं मिला है। बेतवा बहती रही उपन्यास में इस कुप्रथा के बारे में जिक्र किया है। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र उर्वशी के भाई के सामने भी यही दहेज की समस्या देखने को मिलती है। दहेज की समस्या होने के वजह से अजीत अपनी बहन का विवाह चार बच्चों के पिता के साथ तय करने की कोशिश करता है जो कि यह रिश्ता उसके पिता को पसंद नहीं आता। उर्वशी के पिता अपनी बेटी की शादी के लिए कर्ज लेते है ताकि उसकी शादी किसी योग्य वर के साथ कर सके। नाना के साथ उर्वशी के पिता बी. डी. ओ. साहब से मिलने गये। वैसे तो सरकारी कर्ज खेती के लिए दिये जाते है। किंतु आम तौर पर विवाह के लिए कर्ज उपयोग में लिया जाता है। उर्वशी के नाना बी. डी. ओ. से कहते है। लोन मिलत है साहब आपके यहाँ सो मेहरबानी कर दो। आपसे छिपाहें नहीं, लौन हम खाद-बीज के लानें नहीं है लै जा रहे। जा मोहनसिंह की बिटिया छिपाहें नहीं. लौन हम खाद-बीज के लानें नहीं ले जा रहे। जा मोहनसिंह की बिटिया की ब्याह है लागत असाढ सादी है साहब। नाना ने दो टूक बात उनके सामने रख दी। उर्वशी के दादा हाथ जोड़े बैठे थे।'[3]

विवाह के लिए दहेज की मांग गरीब घर की बेटीयों के सामने बहुत बड़ी समस्याएँ है। इदन्नमम की कुसुमा कहती है। श्खोट तो हमारे मताई-बाप का था। वे गरीब काहे को थे? गरीब थे तो अपनी बिटिया के लिए सुख के सपने काहे देखे? सपने देखे ही थे तो मान-परतिष्ठा वाले घर के लिए उतना दहेज काहे नहीं जुटा पाये? काहे नहीं कर पाये घर-वर की इच्छा पूरन?[4]

बालविवाह भी आज भी समस्या का कारण बना हुआ है। बालविवाह भी स्त्री शोषण का जिम्मेदार है क्योंकि शादी के समय वर-वधू इतने छोटे होते है कि उन्हें शादी तक का मतलब पता नहीं होता है। मैत्रेयी जी 'अगनपाखी' उपन्यास में इसका चित्रण किया है। इस उपन्यास में अपनी शादी के बारे में चंदर के पिता उसको बताते है कि 'जब नाई घोड़े पर चढ़ाने की कोशिश करता है तब वे नाई के बाल पकड़कर घोड़े से फिसलने लगे थे। उनको तीन-चार आदमियों ने जबरदस्ती काबू में किया था। माँवरों के समय वे फूका की कलाई में बंधी रस्सी के जरिए पाँव का टखना बँधा महसूस कर रहे थे। कन्या पक्ष के किसी आदमी ने टोका तो फूका ने चटपट जवाब दे दिया था हमारे यहाँ यह चलन है जू।'[5]

मैत्रेयी जी को लगता है कमी आई है। उनके अनुसार कि दहेज प्रथा की समस्या कम होने के कारण अनमोल विवाह में श्लड़की बेचने, दहेज देने और दहेज हत्याओं का सवाल भयावह है। समाज में तेजी से फैलता हुआ और नतीजे में भ्रूण हत्या से गुजरती है।'[6]

जिस प्रकार विवाह के नए-नए प्रकार हम देख रहे है उसी प्रकार उनमें नई-नई समस्याएँ भी देखने को मिल रही है।

पूजा-पाठ का अपना ही एक अलग महत्व है पूजा-पाठ कई तरीकों से किया जाता है भारत जैसे देश में विभिन्न प्रकार के लोग रहते है। लोगों का अपने-अपने ढंग की पूजा विधि द्वारा भगवान को खुश करने का प्रयत्न किया जाता है भले ही यह उनके पूजा करने की आस्था हो या अंधविश्वास जो भी कहे लेकिन चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित वह व्रत रखता ही है उसकी श्रद्धा एंव पूर्ण विश्वास रहता है करवाचौथ के माध्यम से स्त्रीयों को लगता है कि यह व्रत करने से उनके पति की आयु लंबी होगी यह उनका विश्वास है जिसके द्वारा वह नियम धर्म से पूजा-पाठ करती है। लोगों की आस्था है कि भगवान का भक्ति ध्यान करने से उनके जीवन में कई सारे चमत्कार हो सकते हैं ऐसे कई चमत्कारों को पिक्चरों में दिखाया जाता है कितने तो पूजा-पाठ देवी-देवता उनके जीवन में चमत्कार करे इसी भाव से करते हैं। कोई भी शुभ काम पूजा-पाठ के बिना आरंभ नहीं हो सकता है ऐसी धारणा देखने को मिलती है इसलिए हर काम के लिए भगवान की पूजा-पाठ की जाती है। पहले से बुजुर्गों द्वारा सुनाई गई देवी-देवताओं की कहानी आज भी सभी लोगों के दिलों दिमाग में बसी है इसका एक उदाहरण झूलानट उपन्यास में देखने को मिलता है।

अनीदर फल गाल के भीतर की नरम खाल मांस को पार करता हुआ बाहर निकल आए और एक बूँद खून न गिरे। तेरी महिमा माता। चमत्कार।[7] ऐसे कई चमत्कार बातों के कारण भक्तों की संख्या बढ़ती जा रही है शीलों जैसी नारियों इन सब बातों में विश्वास नहीं करती और मैत्रेयी जी ने अपने साहित्यों के माध्यम से यह परिवर्तन लेने का प्रयास किया है। पूजा पाठ और धर्म का संबंध हमेशा देखने को मिलता है। सदियों से ही पूजा पाठ करने का रिवाज चला आ रहा है। बहुत लोगों का मानना है कि बिना पूजा पाठ के किसी भी कार्य का शुभारंभ नहीं किया जा सकता है। इसी प्रकार मैत्रेयी जी के उपन्यास 'बेतवा बहती रहीं में पूजा पाठ का प्रसंग देखने को मिलता है। इस उपन्यास में मीरा

अपने मामा घर नानी को नहा-धोकर सूरज भगवान को जल चढ़ाती है और तुलसी माँ के पौधे के नीचे दिया जलाकर उसकी परिक्रमा करती हैं तुलसी की पूजा हर घर में की जाती है। पूजा-पाठ के बिना कोई भी शुभ कार्य अधूरा है। शादी-ब्याह इत्यादि।

इदन्नमम उपन्यास में जब मन्दाकिनी का विवाह तय हो जाता है तब पुजारी महाराज जी आकर पूजा-पाठ करते है, 'पुजारी महाराज स्वच्छ चादर पर गद्दी बिछाकर विराजमान है। गणपति पर रोली-अक्षत छिड़कते हुए मंत्रोच्चार करने लगे।

'मंगलम् भगवान विष्णू मंगलं गरुडध्वजः ।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षाय, मंगलाय तनो हरि।'[8]

भारतीय समाज में ज्यादातर ग्रामीण परिवेश में शकुन-अपशकुन देखने को मिलता है। पुरुषों से ज्यादा स्त्री में इसे लेकर ज्यादा भावानाएँ व्याप्त है। शकुन-अपशकुन के रूप अलग-अलग प्रकार में देखने को मिलते है। विधवा का मुख नहीं देखना, बिल्ली का रास्ता काटना, आदि अपशकुन माने जाते है। कही कही तो ऐसा माना जाता है कि अगर हम कही जअ रहे है तो अगर सामने से भरा पानी का घड़ा आना शुभ माना जाता है। साथ ही साथ दिन के समय किसी का सोना या उदास होना अपशकुन होने की निशानी है। 'झूलानट' : उपन्यास में शीलों अपनी कोठी में उदास होकर सोई है। तभी उसे देखकर बालकिशन को चंपादास बैद की बात याद आती है औरत दिन के समय सुस्त, उदास और चुपचाप लेटी हो, तो समझ लो अनिष्ट योग। वनवास और दशरथ-मरण जैसी विपत्तियाँ।'[10]

निष्कर्ष

मैत्रेयी पुष्पा की स्त्रियाँ धर्म को अंधश्रद्धा और अंध-अनुकरण के रूप में नहीं स्वीकारतीं। वे सवाल करती हैं, टकराती हैं और धीरे-धीरे उस धार्मिक जाल को काटती हैं, जो सदियों से उनके गिर्द बुना गया है। 'चाक' की नायिका शीतल, विधवा होकर भी धार्मिक सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध जाकर पुनः विवाह करती है, जो इस बात का संकेत है कि धर्म की रुढ़ियाँ अब स्त्री की नियति नहीं रहीं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री की धार्मिक स्थिति का चित्रण केवल सामाजिक आलोचना नहीं है, बल्कि वह एक वैचारिक हस्तक्षेप भी है, जो धर्म को स्त्री-स्वातंत्र्य के प्रतिकूल से अनुकूल दिशा में मोड़ने का प्रयास करता है। उनके साहित्य में चित्रित स्त्रियाँ धार्मिक शोषण से मुक्ति की आकांक्षा रखती हैं, और आत्म-चेतना, विद्रोह और विमर्श के माध्यम से एक वैकल्पिक धार्मिक संवेदना का निर्माण करती हैं।

मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य यह संकेत करता है कि धर्म, जो मूलतः मानवीय मर्यादा, सहिष्णुता और करुणा की शिक्षा देने वाला तत्त्व है, उसे पितृसत्तात्मक समाज ने अपने हितों के लिए स्त्री के दमन का उपकरण बना लिया है। 'इदन्नम्', 'चाक',', 'झूला नट', 'बेतवा बह रही है', , आदि उपन्यासों में यह यथार्थ तीव्रता से उभरकर सामने आता है। इन उपन्यासों में चित्रित स्त्रियाँ धार्मिक अनुष्ठानों, व्रतों, परंपराओं और पूजा-पाठ की प्रक्रियाओं से जुड़ी हैं, परंतु यह जुड़ाव स्वेच्छा से नहीं, बल्कि सामाजिक दबाव और पारिवारिक के कारण होता है। विशेषकर ग्रामीण पृष्ठभूमि की स्त्रियाँ धर्म की आड़ में परंपरागत भूमिकाओं में बाँधी जाती हैं। धर्म उन्हें त्याग, सहनशीलता, शील और चुप्पी का पाठ पढ़ाता है, वहीं पुरुष को धर्माधिकारी, धर्मरक्षक और निर्णायक की भूमिका प्रदान करता है। धार्मिक मूल्यों की यह पक्षपाती व्याख्या स्त्री की आत्मनिर्भरता, निर्णयात्मकता और आत्म-अधिकार के विकास में बाधा बनती है। उनकी लेखनी धर्म की सत्ता को स्त्री दृष्टिकोण से चुनौती देती है और यह दिखाती है कि स्त्री की मुक्ति न केवल सामाजिक और राजनीतिक, बल्कि धार्मिक पुनर्संरचना के बिना अधूरी हैं।

संदर्भ सूची

1. मैत्रेयी पुष्पा,'अगनपाखी',वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली 2001 पृ.सं.-86
2. मैत्रेयी पुष्पा,'चाक,'राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.1बी,नेताजी सुभाश मार्ग,दरियागंज नई दिल्ली 2018 पृ. सं.-185
3. मैत्रेयी पुष्पा,'बेतबा बहती रही', किताबघर प्रकाशन,नई दिल्ली 1993 पृ.सं.-35
4. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नम', किताबघर प्रकाशन,नई दिल्ली 2010 पृ.सं.-87
5. मैत्रेयी पुष्पा, 'अगनपाखी', वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली 2001 पृ.सं.-51
6. मैत्रेयी पुष्पा,'त्रियाहठ', किताबघर प्रकाशन,नई दिल्ली 2006 पृ.स -9
7. मैत्रेयी पुष्पा,'झुलानट', राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.1बी,नेताजी सुभाश मार्ग,दरियागंजनई दिल्ली 2018 पृ.सं.-10
8. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नम,किताबघर प्रकाशन,नई दिल्ली 2010 पृ.सं.-3
9. मैत्रेयी पुष्पा, 'झुलानट', राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.1बी,नेताजी सुभाश मार्ग,दरियागंज नई दिल्ली 1999 पृ.सं.-116